Anusandhanvallari
Vol 2026, No.1
January 2026
ISSN 2229-3388

" कवि कोदूराम दलित के काव्य में ग्रामीण चेतना "

प्रो. मंगली बंजारा
सहायक प्राध्यापक(हिन्दी)
शास.के.आर.डी.महाविद्यालय
नवागढ़, जिला–बेमेतरा (छ.ग.)

सारांशः– कोदूराम दलित के काव्य में ग्रामीण जीवन की अवधारणाऐं, शोषण, संघर्ष, समाज में ऊंच–नीच की भावना, छुआछुत, वर्ग संघर्ष, आर्थिक विषमताऐं, अमीर–गरीब जैसी विषय मूलक ग्रामीण सामाजिक आघात की प्रतिक्रिया, ग्रामीण जनजीवन व समाज के नियमों एवं विधानों का चित्रण, कृषक जीवन चित्रण का स्वर, ग्रामीण चेतना के मानदण्ड है।

प्रस्तावना :'– कवि युग परिवेश से प्रभावित होता है। जो सामाजिक ग्रामीण जीवन के साथ प्रतिबद्ध होता है। वह अपने काव्य को प्रभावशाली बनाता है। कवि ग्रामीण समाज का सदस्य होने के कारण उनका सृजन क्षेत्र ग्रामीण चेतना से जुड़ा रहता है। एक कवि समाज का प्रतिनिधित्व करता है। तो उनके साहित्य में ग्राम का प्रतिबिम्ब रहता है। ग्रामीण जन के संघर्ष कवि दलित की कविताओं में प्रतिफलित हुआ है। कवि ने ग्रामीण चेतना के विभिन्न मूल्यों को उनके समकालीन सन्दर्भो के साथ प्रमाणिक ढंग से अभिव्यक्त किये है। किसी छोटे गांव में शिक्षा की स्थिति और गंभीर होती है। शिक्षा सुविधाओं का अभाव खटकता है। ग्रामीण विद्यार्थियों को शिक्षा के लिए गांव छोड़ना पड़ता है। इस स्थिति से स्वयं कवि को गुजरना पड़ा है। ग्रामीण जीवन में शिक्षा का अभाव, विसंगतियां ज्यादा होती थी, यहां लोग न आर्थिक रूप से सम्पन्न थे न शिक्षा के प्रचार–प्रसार के सुविधाएं थे इसलिए गांव, नगरों के अपेक्षा आर्थिक पिछड़ा हुआ था। कवि ने अपनी कविताओं में श्रमिकों और किसानों को काव्य में विशिष्ट स्थान देकर युगीन परिस्थिति के प्रति ध्यान आकर्षित किया है। दलित जी मूलतः एक छत्तीसगढ़ी कवि थे, उस समय आजादी का घोर संघर्ष चल रहा था और अपने विचारों को गरीब जनता तक पहुचाना चाहते थे, तो उन्होने छत्तीसगढ़ी भाषा को माध्यम के रूप में चुना और गद्य, पद्य दोनो में समान गति के साथ काव्य की रचना किए।

कवि कोदूराम दलित के काव्य में ग्रामीण चेतना :– ग्रामीण जीवन की विभिन्न भुमिकाओं की सृष्टि के मूल में कवि की व्यापक दृष्टिकोण व्यंजित हुई। उसकी कविताओं में व्यापक युग दर्शन का परिचायक है। कवि कविताओं और ग्रामीण समाजीकता दोनों के महत्व को स्वीकारता है। कवि ने कविता में जुझारू किसान व मजदूर को कविता में अभिव्यक्त किया है। और ग्रामीण समाज से जुड़कर उनकी संवेदनाओं को अनुभव किया है। उसे कविता के माध्यम से जन–जन तक पहुचाया है। कवि का रचनात्मकता का आधार ग्रामीण था। राह उन्ही की चलते जावें में उन्होने समता मूलक समाज परिकल्पना की है। उन्होने इस कविता के माध्यम से जनहित में काम करने व समाज के लिए विषमता दुर करने का संदेश दिया है। वे लिखते है कि–

जो अपने सारे सुख तजकर
जन–हित करने में जुट जावें
दुर विषमताऐं कर–कर के
जो समाज में समता लावें।

" **सर्वोच्च स्थान** " नामक कविता में गुरू के महत्ता को प्रतिपादित किया है कि गुरू का पद अपने आप में अलग स्थान रखता है। अर्थात – गुरू हमारे जीवन को गढ़नें में क्या–क्या भूमिका निभाता है। और कैसे अपने शिष्य को अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाता है। और विद्या का दान करके एक प्रतिभावान व्यक्ति का निर्माण करता है।

मात–पिता, मित्र, भगवान इन सबसे गुरूदेव महान
देकर के विद्या का दान गढ़े शिष्य जो प्रतिभावान
सब ग्रन्थों में मिले प्रमाण गुरू का है सर्वोच्च स्थान।

उस समय किसानों पर कवि का ध्यान आकर्षित हुआ जो आर्थिक रूप से कृषि पर निर्भर से ऐसे ग्रामीण समस्या को कवि ने सजीव रूप दिया कि किस तरह एक कृषक अपने लहु, पसीना एक करके कठिन मेहनत करके फसल उत्पन्न करता है। उसका सम्मान कविता में देखा जा सकता है–

लहु–पसीना करके एक, उपजाता है फसल अनेक
क्या जुआर क्या गेहु धान, होता है उसका सम्मान।

" बापू की स्मृति" नामक कविता में कवि ने छ.ग. के ग्रामीण लोगों को अहिंसा के प्रति ध्यान आकर्षित कराने का प्रयत्न किये है। और वे गांधीवादी विचारधारा से प्रेरित भी थे–

जय–जय अमर शहीद जय, सुख–सुराज तरू–मूल
तुम्हें चढ़ाते आज हम, श्रद्धा के दो फूल ।।

जय – जय राष्ट्रपिता अवतारी
जय निज मातृभूमि मय हारी
जय–जय सत्य–अहिंसाधारी
विश्व प्रेम के परम पुजारी।।

वर्षा ऋतु चार महीनें का सुन्दर वर्णन **'चउमासा'** नामक कविता में किये है। ग्रामीण जीवनशैली में चौमासा एक महत्वपूर्ण धार्मिक और सांस्कृतिक अवधि है। जिसमें, कई अनुष्ठान, त्यौहार और व्रत किये जाते है। चौमासा वर्षा ऋतु का समय होता है जिसमें चारों ओर पानी भरा रहता है। और प्रकृति हरी–भरी हो जाती है। कृषि कार्य के लिए महत्वपूर्ण समय होता है। यह समय धार्मिक, सांस्कृतिक और कृषि के लिए महत्वपूर्ण है–

घाम दिन गइस, आइस बरखा के दिन
गील होगे माटी चिखला बनिस धुर्रा हर
बपुरी बसुधा के बुताइस पियास हर
हरियागे भुइयां सुग्घर मखमल सही
जामिस हे बन, उल्होइस कांदी–घास हर

" पशु पालन " में पशु प्रेम की संस्कृति की झलक मिलती है। यहां गायें दुध देने के लिए उपयोगी तो है ही, वे ग्रामीणजन के सुख–दुख का आधार भी है। पशुपालन गांव के लोगो के जीवन का अनिवार्य हिस्सा है। पशुपालन के साथ किसानी जीवन की कठिनाईयां किसानो का श्रम, मेहनत की झलक मिलती है। कवि ने कहा है कि हर किसान को पशु–पक्षी को पालना चाहिए। जिससे उत्पादन भी बढ़ेगी और खाद की समस्या भी दुर होगी–

" पालो गाय, भइंस अऊ छेरी दही दुध पाये बर
पोसीं कुकरी–बदक, गारे बेचे बर अऊ खाय बर
बने किसम के पशु–पंछी अब पालना चाही
बढ़िही उत्पादन हर, खाद्य समस्या हल हो जाही।।

रक्षा बंधन त्यौहार, भाई–बहन के अटुट प्रेम और बंधन का प्रतीक है। इस विशेष अवसर पर बहने अपने भाइयों को राखी बांध कर उनकी रक्षा का वचन लेती है। और अपनी बहनों की रक्षा का वादा करते है लेकिन " राखी के परन " कविता में बहने भाई को कह रही है कि वो देश को आगे बढ़ाने में सहयोग करें–

" एके चीज मांगत हौं, आज सहकारिता से
तहू पार करे लाग, भारत के नइया।।

निष्कर्ष :– निष्कर्ष में मै कह सकती हूँ की कोदूराम दलित के कविता में ग्राम्य जीवन का दर्द और खुशी अनेक परिरिस्थितियों में वर्णित है। उनकी सृजनात्मकता ग्रामीण जन–जीवन की दृष्टिकोण से उपयोगी कही जा सकती है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1. बहुजन हिताय बहुजन सुखाय पृष्ठ संख्या 01
2. बहुजन हिताय बहुजन सुखाय पृष्ठ संख्या 02
3. बहुजन हिताय बहुजन सुखाय पृष्ठ संख्या 37
4. बहुजन हिताय बहुजन सुखाय पृष्ठ संख्या 72
5. बहुजन हिताय बहुजन सुखाय पृष्ठ संख्या 76
6. बहुजन हिताय बहुजन सुखाय पृष्ठ संख्या 77
7. बहुजन हिताय बहुजन सुखाय पृष्ठ संख्या 78
8. प्रतिक्रिया एक कविता – भारती जैन
9. इन्टरनेट